1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

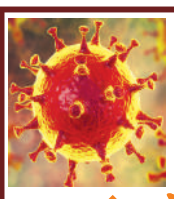

कोरोना वायरस संक्रमण

सतर्क रहें - सुरक्षित रहें

सरकार के निर्देशों का पालन करें

स्वयं बचें - परिवार बचाएं- देश बचाएं

वर्ष 43, अंक 26 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 25 मई, 2020 से रविवार 31 मई, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा कोरोना के खिलाफ लड़ रहे योद्धाओं का किया गया उत्साहवर्धन और सम्मान

नगर निगम के अधिकारियों को सौंपी गई 12000 फेस शिल्ड

आर्यसमाज ने दिया 100000 प्लास्टिक के डिस्पोजल बैग देने का आश्वासन

वैश्विक महामारी कोरोना से आज पूरा संसार पीड़ित है। भारत की राजधानी दिल्ली में भी कोरोना का आतंक अभी कम नहीं है। यहां हर दिन नए कोरोना पॉजिटिव केस बढ़ते ही जा रहे हैं लेकिन गनीमत की बात यह है कि ठीक होने वाले मरीजों की संख्या भी अपने आप में ठीक-ठाक है। कोरोना के चलते पहले लॉक डाउन से लेकर चौथे लॉकडाउन में अब तक इस जानलेवा महामारी के खिलाफ जंग लड़ने वाले योद्धाओं का आर्य समाज की ओर से लगातार उत्साहवर्धन किया जाता रहा है। पिछले दिनों 23 मई 2020 को आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली में आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा नगर निगम के सफाई कर्मचारियों की हौसला अफजाई के लिए 12000 फेस शील्ड नगर निगम के अधिकारियों को सौंपी गई। संघर्ष के दौर में मजबूत मनोबल ही मनुष्य को सफलता दिलाता है, इसलिए आर्य समाज की मान्यता है कि अपना और अपनों का खयाल तो सभी रखते हैं लेकिन जो पूरी मानवता के लिए जो अपनी जान की परवाह किए बिना समर्पित भाव से सेवा का महान कार्य करते हैं, उनकी हिम्मत बढ़ाने के लिए समय-समय पर उनके सम्मान में प्रशंसनीय और अनुकरणीय और उल्लेखनीय कार्य समाज को अवश्य करने चाहिए। क्योंकि सम्मान और उत्साहवर्धन से मनुष्य का मनोबल मजबूत होता है और मनोबल ही वह शक्ति है जिससे मनुष्य कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारता।

इस अवसर पर आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान एवं एमडीएच के चेयरमैन पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की ओर से सभी नगर निगम के कर्मचारियों को आशीर्वाद दिया गया और यह संदेश भी दिया गया कि चाहे समस्या कितनी भी विकट क्यों न हो हिम्मत और हौसले से ही कठिन से कठिन जंग से जीती जा सकता है इस अघोषित और बहुत ही संक्षिप्त कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के व.उप प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी,

- शेष पृष्ठ 8 पर

दिल्ली के तीनों महापौर महोदयों - जत्थेदार अवतार सिंह जी (उत्तरी दिल्ली), श्रीमती सुनीता कांगड़ा जी (दक्षिण दिल्ली) एवं श्रीमती अंजू कमल कांत जी (पूर्वी दिल्ली) को आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से 12 हजार फेस शील्ड दिल्ली नगर निगम के कोरोना योद्धाओं की सुरक्षा हेतु भेंट किए गए। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय सचिव और भूतपूर्व विधायक श्री आर. पी. सिंह जी भी उपस्थित रहे। सभी को वेद भगवान एवं सत्यार्थ प्रकाश भी किए गए।

आर्यसमाज की अपील

कोरोना वायरस संकट अभी टला नहीं : सतर्कता एवं संयम बरतें

आर्य समाज सदैव राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि मानता आया है। कोरोनावायरस के चलते पहले लॉकडाउन से लेकर; और आज तक लगातार राष्ट्रहित में सरकार द्वारा जो भी आदेश पारित हुए उनका आर्य समाज द्वारा सहर्ष पालन किया गया है और आगे भी किया जाएगा। आज लॉक डाउन 4 अंतिम चरण में है लेकिन

जिस तरह से लॉकडाउन में दी गई छूट का लोग दुरुपयोग कर रहे हैं, इससे लगता है कि मानव समाज अभी इस भयंकर बीमारी का सही मतलब समझ नहीं पाया है। हालांकि जीवन और जीविका के प्रति उत्साह अवश्य होना चाहिए लेकिन लापरवाही की प्रवृत्ति जो देखने को मिल

- शेष पृष्ठ 5 पर

सार्वदेशिक सभा का आह्वान - यज्ञ एवं वृक्षारोपण के साथ मनाएं विश्व पर्यावरण दिवस

बन्धुओं! जैसा कि आप सब जानते हैं कि सभी आर्य समाजें हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सार्वजनिक स्थानों पर विशेष यज्ञों का आयोजन करती हैं। किन्तु इस वर्ष कोराना वायरस के कारण सरकारी दिशा-निर्देशों का विशेष पालन किया जाना है। अतः यदि पार्कों और सार्वजनिक स्थलों पर यज्ञ करना संभव न हो तो पारिवारिक यज्ञ करें, 5 से अधिक लोग सम्मिलित न हों, उचित दूरी बनाए रखें। समस्त आर्य समाजों, प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण संस्थानों के सम्मानित अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं, आर्य परिवारों से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भांति विश्व पर्यावरण दिवस के दिन यज्ञ करें और अधिकाधिक वृक्षारोपण करके विश्व कल्याण की कामना करें। कृपया यज्ञ एवं वृक्षारोपण की फोटो सभा के व्हाट्एप्प नं. 7428894010 पर भेजें।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल (संरक्षक), **सुरेशचन्द्र आर्य** (प्रधान), **प्रकाश आर्य** (मन्त्री) — **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली**

धर्मपाल आर्य (प्रधान), **विनय आर्य** (महामन्त्री) — **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

पर्यावरण दिवस बैनर-पत्रक डाउनलोड हेतु bit.ly/5junebanner ; bit.ly/HawanPatrak; bit.ly/HawanResearch पर क्लिक करें।

वेद-स्वाध्याय

मधुविद्या से मैं वर्चस्वति वाणी बोलूं

अश्विना सारघेण मा मधुनांक शुभस्पती।
यथा वर्चस्वतीं वाचमावदानि जनां अनु।। अथर्व० 9/1/12
ऋषि : अथर्वा।। देवता - मधु।। छन्दः अनुष्टुप।।

शब्दार्थ - **अश्विना** = हे अश्विनौ, **शुभस्पती** = हे दीप्ती के पालको, तुम अपने **सारघेन मधुना** = माक्षिक शहद से या सारभरे अमृत और मधुज्ञान से **मा** = मुझको **अंक्तं** = अंजन कर दो, रमा दो यथा, जिससे कि मैं **जनान अनु** = जनों के प्रति, जनता के अनुसेवन करने के लिए **वर्चस्वती वाचम** = तेजस्वी वाणी को **आवदानी** = बोलूं, बोल सकूं।

विनय - हे युगल देवो, हे सर्वत्र ज्योति और रस के देने वाले दिव्य देवो, तुम नाना रूपों में जगत को व्याप्त कर रहे हो। तुम मेरे अंदर सूर्यशक्ति और चंद्रशक्ति के रूप में कार्य कर कर रहे हो,तुम प्राण और अपान के रूप में भी मेरे शरीर का सेवन कर रहे हो।हे अश्विनौ, तुम सदा शुभस्पती हो, दीप्ती के पालक हो,तेज के संरक्षक हो। इसलिए मैं तुमसे वाणी के तेज की कामना करता हूं। मैं चाहता हूं कि मैं जनता की सेवा के लिए अपनी शारीरिक वाणी को, मानसिक वाणी को, आत्मिक वाणी को तेजस्वी, वर्चस्वी, ओजस्वी बना लूं। तुम मधु के लिए प्रसिद्ध हो,। यह स्थूल माक्षिक मधु,शहद भी तुम्हारी ही ज्योति और रस द्वारा बना हुआ होता है। इस शहद के सेवन से मैं अपनी स्थूल वाणी को तेजस्वी और बलवान बना लूंगा,पर तुम्हारा असली मधु तो हमारे अंदर ही है। तुम्हारी क्रिया द्वारा प्राण उठकर जब सिर में व्याप्त हो जाते हैं तो कपाल में जो तुम्हारा मधु झरता है, जिस सारभरे अमृत का हठयोगी लोग खेचरी मुद्रा में अपनी जिहवा द्वारा आस्वादन भी करते हैं, उस अपने मधु से, हे प्राणापानरूपी अश्विनौ, तुम मेरे पूरे शरीर को अंक्त कर दो, मेरे रोम रोम को भर दो, इस प्रकार मधु सिंचित हो जाने पर नि:संदेह मेरी मानसिक वाणी ऐसी वर्चस्वती हो जाएगी कि तब मैं मनुष्यों में जो भाषण करूंगा वह उनके हृदयों का वेधन करता हुआ जाएगा और अवश्य असर पैदा करेगा, पर हे सूर्यप्राण और चंद्रप्राणरूपी अश्विनौ, तुम जिस मधु के लिए प्रसिद्ध हो वह तो तुम्हारा मधुज्ञान है, तुम्हारी ज्ञान-रसभरी मधुविद्या है। उस तुम्हारे मधु द्वारा मेरा आत्मा जब तृप्त हो जाएगा तो मेरी वाणी में आत्मा बोलने लगेगा। उस समय मेरी आत्मा से निकलने वाले शब्द ऐसे ओजस्वी होंगे कि वे नि:संदेह मनुष्यों को हिला दिया करेंगे और उन्हें उचित कर्म में प्रवृत कर दिया करेंगे। इस सारघमधु से सिंचित आत्मिक वाणी द्वारा ही, हे अश्विनौ, मैं जनों का सच्चा अनुसेवन कर सकूंगा, उनका सच्चा उपकार-साधन कर सकूंगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भागवत कथाकारों द्वारा व्यासपीठ से इस्लाम को महिमामण्डित करने का मामला

तथाकथित सन्तों एवं कथाकारों के मंचों से कुरान कथा का पाठ कब तक?

भारत में आजकल भागवत कथा के नाम पर एक दूसरी ही कथा चल रही है। इस कथा में योगेश्वर श्री कृष्ण जी महाराज की जीवनलीला के बीच में अल्लाह-मौला,जीसस और नबी आ गए हैं। भारत के कुछ बड़े प्रसिद्ध कथावाचक हैं, जिनका काम सामान्य जनों तक धर्म का ज्ञान और महापुरुषों का चरित्र पहुंचाने का है। वह आजकल इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर अनेकों ऐसी विडियो घूम रही हैं जिनमें कथित कथावाचक सनातन मंचों का प्रयोग अपने किसी निजहित के लिए करते दिख रहे हैं। निजहित इसलिए कहा क्योंकि जब ये लोग मुफ्त में भागवत कथा नहीं करते तो मुफ्त में नमाज अजान का प्रचार क्यों रहे हैं?

आखिर भागवत कथा करते-करते ये लोग अचानक कुरान कथा क्यों करने लगे? कहीं ऐसा तो नहीं कि धार्मिक ट्रस्टों को मजहब विशेष द्वारा कुछ फंड दिया जा रहा हो? या फिर यह लोग इतने धर्मनिरपेक्षता में इतने अंधे हो गए कि अपना धर्म दिखाई नहीं देता और 1400 साल पहले एक व्यक्ति द्वारा खड़ा किया संगठन इन्हें धर्म दिखाई देने लगा? अगर ऐसा है तो जब किसी धर्म के ध्वजवाहक ही पथ पथभ्रष्ट हो जाए तो उस धर्म का क्या होगा यह हम सबको सोचना होगा!

आखिर क्यों किसी को जीसस और मोहमम्द की करुणा दिखाई दे रही है, आखिर योगिराज श्रीकृष्ण जी महाराज के जीवन चरित्र के बीच में अल्लाह-मौला, जीसस, मोहम्मद कहाँ से आ गए? व्यासपीठ पर बैठकर एक कथावाचक देवी चित्रलेखा जी अब कह रही है कि क्या फर्क पड़ता है मैं तो सभी धर्मों में विश्वास करती हूँ।

शायद इन देवी जी को इतिहास का ज्ञान नहीं है कि कभी ईरान के पारसी भी सोचते थे कि क्या फर्क पड़ता है, नतीजा आज इरान में पारसी नहीं हैं। कभी अफगानिस्तान के हिन्दू और बौद्ध सोचते थे क्या फर्क पड़ता है। परिणाम आज वहां न बौद्ध हैं न हिन्दू। कभी बलूचिस्तान के हिन्दू भी सोचते थे कि क्या फर्क पड़ता है आज बलूचिस्तान में हिन्दू नहीं हैं। कभी लाहौर और पेशावर के सिख भाई भी सोचते थे कि क्या फर्क पड़ता है आज लाहौर में सिख नहीं हैं। कभी कश्मीर के हिन्दू सोचते होंगे क्या फर्क पड़ता है आज घाटी के हिन्दू जिन्हें पंडित कहा जाता है उनसे जाकर पूछिए पता चल जाएगा क्या फर्क पड़ता है।

असल में आज कल जिस तरह कोई भी उठकर कथा करने लगा हैं, उससे यह एक पूरा बिजनेस बन गया? कथावाचकों की बढ़ती लोकप्रियता मजेदार कथावाचक पैदा कर रही है। ये ऐसे कथावाचक हैं जो सत्संग के गुर इंस्टिट्यूट में सीख कर आ रहे हैं और वह भी गुरुदक्षिणा नहीं बल्कि फीस देकर। कभी आप वृंदावन जाएं तो वहां की दीवारों पर गौर करें। कैसे वहां की दीवारें फटाफट कथावाचक बना देने वाले दावों से वे अटी पड़ी हैं। वृंदावन में कथावाचक पैदा करने वाले एक-दो नहीं बल्कि 100 के करीब सैंटर खुल गए हैं। इनमें से कुछ ऐसे संस्थान हैं जो 3 से 6 महीने में ही एक्सपर्ट कथावाचक बनाने का दावा करते हैं और तीन महीने में सीख कर आए कथा वाचक आजकल गोपियों के किस्से सुना रहे हैं।

हालांकि पुराणों के साथ इसका आरम्भ मुगलकाल से शुरू हो गया था जब मुगलों ने देखा था कि योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का चरित्र इतना ऊंचा और महान है कि उनका नबी श्रीकृष्ण जी का मुकाबला नहीं कर सकता। तब रहीम और रसखान द्वारा कृष्ण के चरित्र को बदनाम करने का काम शुरू हुआ। रहीम ने अपने दोहों में कृष्ण से गोपियों के कपडे चोरी करने की कथा जोड़ दी और रसखान ने सुजान रसखान और

.....जब मुगलों ने देखा था कि योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का चरित्र इतना ऊँचा और महान है कि उनका नबी श्रीकृष्ण जी का मुकाबला नहीं कर सकता। तब रहीम और रसखान द्वारा कृष्ण के चरित्र को बदनाम करने का काम शुरू हुआ। रहीम ने अपने दोहों में कृष्ण से गोपियों के कपडे चोरी करने की कथा जोड़ दी और रसखान ने सुजान रसखान और प्रेमवाटिका में उनकी 16 हजार पत्नियाँ जोड़ दीं तथा श्रीकृष्ण जी को रसिक रासलीला करने वाला बना दिया। माखन चोर से लेकर उन्हें छिपकर कपडे चुराने वाला बना दिया। गीत बना - 'मनिहार का वेश बनाया श्याम चूड़ी बेचने आया' - अश्लील कथा जोड़ दी कि उनके आगे पीछे करोड़ों स्त्रियाँ नाचती थी वो रासलीला रचाते थे।.....

प्रेमवाटिका में उनकी 16 हजार पत्नियाँ जोड़ दी तथा श्रीकृष्ण जी को रसिक रासलीला वाला करने वाला बना दिया। माखन चोर से लेकर उन्हें छिपकर कपडे चुराने वाला बना दिया। गीत बना - 'मनिहार का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया' - अश्लील कथा जोड़ दी कि उनके आगे पीछे करोड़ों स्त्रियाँ नाचती थी वो रासलीला रचाते थे।

जबकि श्रीकृष्ण की बांसुरी में सिवाय ध्यान और साधना के और कुछ भी नहीं था। पर मीरा के भजन में दुख खड़े हो गए, पीड़ा खड़ी हो गए। सूरदास के कृष्ण कभी बड़े नहीं होते। उन्होंने अपनी सारी कल्पना कृष्ण के बचपन पर ही थौप डाली। पता नही बड़े कृष्ण से सूरदास जी को क्या खतरा था। हजारों सालों तक कृष्ण के जीवन को हर किसी ने अपने तरीके से रखा भागवत कथा सुनाने लगे। कृष्ण का असली चरित्र जो वीरता का चरित्र था जो साहस का था, जो ज्ञान का था जो नीति का था, जिसमें युद्ध की कला थी वो सब हटा दिए, नकली खड़ा कर दिया जिसका नतीजा आने वाली नस्लें नपुंसक होती गई रासलीला की बात के पीछे हमारी कायरता छुप कर बैठ गई है।

जिस तरह आज ये व्यासपीठ पर बैठे कथाकार श्रीकृष्ण जी को रसिक बोलते हैं क्या ये जानते हैं कि स्त्री जाति के सम्मान की बात अगर आएं तो कृष्ण जैसा कोई उदहारण इस संसार नहीं मिलेगा। मोहम्मद ने स्त्री को पुरुष की खेती कहा, तो जीसस ने तो उनके बीच प्रवचन करने से मना कर दिया। बुद्ध ने स्त्री को दीक्षित करने से मना किया। महावीर ने तो स्त्री को मोक्ष के लायक ही नहीं समझा। 24 तीर्थकरों में एक तीर्थंकर थी मल्लिबाई उसका नाम भी बदलकर मल्लीनाथ कर दिया।

परन्तु कृष्ण ने भूलकर भी जरा-सा भी अपमान किसी स्त्री का नहीं किया। ये

- शेष पृष्ठ 5 पर

ईसाई मिश्नरियों की शिकायत पर मूर्ति को कपड़े से लपेटा

क्या भारत माता की मूर्ति किसी भारतीय की भावना को आहत कर सकती है? नहीं! तो फिर क्यों हुई एफ.आई.आर.

अभी तक मंदिरों से देशभक्ति के नारों और भारतीय उत्सवों से जिन लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हुआ करती थी अब उनकी भावनाएं तमिलनाडु में कन्याकुमारी से कुछ ही दूर एक तिराहे पर भारत माता की मूर्ति देखकर आहत हो गयी। ईसाई मिशनरियों ने शिकायत दर्ज करी कि भारत माता की मूर्ति उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करती है। विडम्बना देखिये तमिलनाडु की पुलिस भले ही किसी और चीज की रक्षा करने से चूक जाएँ पर धार्मिक भावनाओं की रक्षा बड़ी मुस्तैदी से करती है, इसी कारण पुलिस ने तुरंत मूर्ति को कपडे से लपेट कर ढक दिया और इसका विरोध करने वाले हिंदुओं को गिरफ्तार कर लिया।

हम सब बड़े गर्व से कहते है 1947 में हमने हजारों साल से बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को मुक्त कराया था अब भारत माता स्वतंत्र है लेकिन आज 2020 में उसे बोरी से लपेट दिया गया क्योंकि ब्रिटेनिया माता के बेटों की भारत माता की मूर्ति से भावनाएं जो आहत होने लगी हैं। हालाँकि ये भारत माता की मूर्ति से भावना आहत होने का आज का पहला मामला नहीं है।कोई कहता है हम भारत माता की जय नहीं बोलेंगे तो किसी को मूर्ति ही रास नहीं आई।

केवल इतना भर नहीं है भारतीय भूमि से जुड़े किसी भी त्यौहार उत्सव या महापुरुष से नफरत के पूरे कांसेप्ट समझिये। कुछ समय पहले रक्षाबंधन पर मेहंदी लगाकर जब कुछ छात्रा फतेहपुर के सैंट मेरिज कॉन्वेंट मिशनरी स्कूल में पहुंची तो वहां के ईसाई प्रबंधन ने सभी हिन्दू छात्राओं को सजा के तौर पर धूप में खड़ा कर दिया था। बात इतने तक नहीं रुकी बल्कि स्कूल की प्रिंसपल सिस्टर सरिता ने मेहँदी उतरवाने के लिए छात्राओं के हाथ पत्थर से तब तक घिसवाए जब तक उनके हाथों से ब्लीडिंग नहीं होने लगी। और छात्राओं के हाथों में बंधी राखियों को भी काटकर फेंक दिया गया।

सोचिये क्या इस भारत देश में किसी स्कूल में किसी ईसा मसीह के क्रॉस या चित्र पहने छात्र को अगर स्कूल से बाहर फेंक दिया जाये तो इसकी गूंज कहाँ तक जाएगी? शायद शाम तक वेटिकन से फोन आ जाये या सारे विश्व के पादरी अपनी धार्मिक भावना की गठरी लेकर सड़कों पर उतर जाये कि भारत में अल्पसंख्यक समुदाय के साथ क्या हो रहा है। लेकिन हमारी धार्मिक भावना उस समय मर जाती है, जब हैदराबाद के सेंट एडम्स हाई स्कूल, चिक्कडापल्ली में एक हिन्दू बच्चे को ईसाई स्कूल ने बाहर सिर्फ इसलिए फेंक दिया जाता है। क्यूंकि वो भगवान का लॉकेट पहनकर स्कूल गया था। ये नफरत लॉकेट से नहीं थी आप उस स्कूल में जीसस के लॉकेट पहनिए कोई रोक टोक नहीं बस नफरत आपके देवताओं से है।

..... हमारे बच्चें जिंगल बेल-जिंगल बेल गाते हैं हम बड़े खुश होते हैं। उस समय हमारी धर्मिक भावनाएं धर्मनिरपेक्षता के ठेके पर बोतल लेने चली जाती है, उसके नशे में हम सर पर लाल केप लगाकर सेंटा बन जाते हैं। लेकिन जब उनके बच्चों को स्कूल की प्रार्थना में असतो माँ सद्गमय गाना पड़ता है, तो नया-नया ईसाई बना विनायक शाह अपने बच्चें की धार्मिक भावना की रक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट में खड़ा हो जाता है कि साहब ये असतो माँ सद्गमय वाली प्रार्थना बंद कर दो। क्योंकि हमारी और हमारे बच्चों की धार्मिक भावना इससे आहत होती है। और जज साहब भी उसे लताड़ने के बजाय केंद्रीय विद्यालय में होने वाली इस प्रार्थना पर केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर पूछते हैं कि क्यों न इस प्रार्थना को बंद कर दिया जाये?.....

हमारे बच्चें जिंगल बेल जिंगल-बेल गाते हैं हम बड़े खुश होते हैं।उस समय हमारी धर्मिक भावनाएं धर्मनिरपेक्षता के ठेके पर बोतल लेने चली जाती है, उसके नशे में हम सर पर लाल केप लगाकर सेंटा बन जाते हैं। लेकिन जब उनके बच्चें को स्कूल की प्रार्थना में असतो मा सद्गमय गाना पड़ता है, तो नया-नया ईसाई बना विनायक शाह अपने बच्चें की धार्मिक भावना की रक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट में खड़ा हो जाता है कि साहब ये असतो मा सद्गमय वाली प्रार्थना बंद कर दो क्योंकि हमारी और हमारे बच्चे की धार्मिक भावना इससे आहत होती है। और जज साहब भी उसे लताड़ने के बजाय केंद्रीय विद्यालय में होने वाली इस प्रार्थना पर केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर पूछते हैं कि क्यों न इस प्रार्थना को बंद कर दिया जाये?

बात यही तक नहीं रुकती जब मध्य प्रदेश के खंडवा में सेंट पायस स्कूल में संस्कार बंसल नाम का सातवीं कक्षा का एक छात्र अपने जन्म दिन पर स्कूल में माथे पर तिलक लगाकर और हाथ में कलावा बांधकर जाता है तो स्कूल के प्रिसंपल की धार्मिक भावनाएं आहत हो जाती है और बच्चे को तब तक पीटा जाता हैं जब तक बच्चें का तिलक नहीं मिट जाता।

सिर्फ इतना नही देश भक्ति में इनकी भावनाएं अलग-अलग तरह से कुलाचें मारती हैं, कुछ समय पहले श्रीलंका में हुए चर्च पर हमले के बाद हमारे देश के चर्च और मिशनरी स्कूलों में वहां के मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गयी थी, देखा जाये तो मानवता के लिहाज इसे इसमें कोई बुराई नहीं लेकिन बरेली के बिशप कॉनराड चाइल्ड केयर स्कूल में श्रीलंका के चर्च में हुए आतंकी हमले के वीभत्स दृश्य दिखाकर ईसाई समुदाय के धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार शांति पाठ कराया गया। वहां उपस्थित एक बच्चें ने जब यह सवाल पूछा कि पुलवामा में शहीद हुए हमारे जवानों के लिए आपने शांति पाठ क्यों नहीं किया तो बच्चे की पिटाई की जाती है।

ऐसे एक दो जगह नहीं बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों में यह सब चल रहा है। कुछ समय पहले ही गुजरात की राजधानी गांधीनगर के सेक्टर-21 के एक मिशनरी स्कूल में रक्षा बंधन से अगले दिन जब हिन्दू बच्चे राखी बांधकर स्कूल पहुंचे तो मिशनरी स्कूल की धार्मिक भावनाएं आहत हो गयी। और सभी बच्चों को लाइन में खड़ा करके ब्लेड से सभी बच्चों की राखी काट कर फेंक दी गयी।

सेकुलर देश में धर्मिक भावनाएं आहत ये कोई एक दो मामले नहीं हैं ईसाई मिशनरी स्कूल, कान्वेंट स्कूलों से इस तरह की खबरे लगभग रोज ही आती हैं, जिनमे भारतीय मीडिया बड़ी खामोशी से दबा देता है, हिन्दू बच्चों पर तरह-तरह के अत्याचार होते हैं। कभी रक्षाबंधन की राखी काटकर फेंकी जाती है। बच्चे की पिटाई की जाती है। कभी किन्हीं बच्चियों को इसलिए मारा जाता है क्यूंकि वो अपने त्यौहार के दिन मेहँदी लगाती हैं और वो बच्चियां भी फिर अगले दिन स्कूल इसलिए चली जाती हैं, क्योंकि उसी रात खबर का गला घोट कर मौत की नींद सुला दिया जाता है।

अब समझना होगा कि आज जिन लोगों की भावनायें भारत माता की मूर्ति देखकर आहत हो गयी सोचिये आपके मंदिर आपके धर्म स्थल, आपके त्यौहार उत्सव देखकर वो अपने अन्दर का जहर किस प्रकार पी रहे होंगे, अभी उनका वश नहीं है अभी वो भारत में जीसस की विशाल प्रतिमा और माता मरियम के मंदिर बना रहे है जिस दिन उनका काम पूरा हो जायेगा उस दिन वो खुलकर अपना विषवमन शुरू करेंगे।

आज भारत माता की मूर्ति से जिनकी धार्मिक भावना आहत हुई उनके लिए हम सिर्फ इतना कहना चाहते हैं कि भारत माता का मतलब एक सिर्फ मूर्ति नहीं है, बल्कि वह हमारा करोड़ों वर्ष का इतिहास है, वो हमारी जननी जन्मभूमि है, जीवनदात्री है, वह हमारी थाती है। इसीलिए उसे सर्वोच्च स्थान मिलता है। यही कारण था कि ब्रिटेनिया माता के वंशजों से अपनी भारत माता की मुक्ति के लिए लड़ने वाले हमारे क्रांतिकारी बलिदानी भारत माता की तस्वीर अपने पास रखते थे और शान से कहते थे - **'तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें।'**

- राजीव चौधरी

प्रधानमंत्री राहत कोष में आर्य समाज का योगदान

1) भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की अपील पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने **5 करोड़** की दानराशि प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा करके महान कार्य किया।
2) गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की ओर से स्वामी धर्मानन्द जी ने **111111/- रुपये** की राशि प्रधानमंत्री राहत कोष में प्रदान की।
3) आर्य उप प्रतिनिधि सभा कन्नौज द्वारा **51000/- रुपए** की राशि प्रधानमंत्री राहत कोष में प्रधान की गई।
4) आर्य समाज स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर राजस्थान द्वारा **51000/- रुपये** की राशि प्रधान की गई।
5) आर्य समाज कुलहाड़ी के तत्त्वावधान में कोटा आर्य समाज की ओर से **105000/- रुपये** का योगदान।
6) आर्य समाज मारतहल्ली, बैंगलोर कनार्टक द्वारा **10000 एवं 125000** कुल **135000/-रुपये** का योगदान।
7) आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर **608000/- रुपये** का योगदान।
8) आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश-विदर्भ द्वारा मुख्यमन्त्री राहत कोष में **51000/-रुपये** का योगदान किया।

इसके अतिरिक्त अनेक आर्य महानुभावों ने अपने-अपने स्तर पर अपनी सामर्थ्य अनुसार प्रधानमंत्री राहत कोष में अपना योगदान प्रदान किया।

कोरोना संक्रमण : भारत में विभिन्न स्थानों पर आर्य समाज द्वारा की गई मानव सेवा

वैश्विक महामारी कोरोना एक अदृश्य शत्रु के रूप में विनाशकारी लीला का तांडव मचा रही है। ऐसी भयानक स्थिति में सारे विश्व को अपना परिवार मानने वाला आर्य समाज अपने-अपने स्थान और स्तर पर मानव सेवा के विभिन्न आयाम स्थापित कर रहा है। इस संकट की घड़ी मे भारत की समस्त आर्य समाज, आर्य शिक्षण संस्थाएं, आर्य सेवा प्रतिष्ठान और आर्य परिवारों ने सेवा के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। इस अनुपम सेवा के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समस्त अधिकारी, कार्यकर्त्ता और महानुभावों को बहुत-बहुत बधाई। यहां प्रस्तुत है भारत में विभिन्न स्थानों पर की गई सेवाओं के संक्षिप्त वर्णन एवं झलकियां।

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर द्वारा कोरोना पीड़ितों के उपचार हेतु 21 कमरें आईसोलेशन वार्ड बनाने के लिए प्रदान किए गए।

आर्य समाज सूरसागर जोधपर द्वारा सब्जी मण्डी का सेनिटाइजेशन किया गया।

महर्षि दयानंद निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर द्वारा गरीबों में 200 पैकेट बांटे।

आर्य समाज फाउन्डेशन औरगांबाद महाराष्ट्र द्वारा 1000 लोगों को बांटा गया 30-30 किलों राशन सामग्री।

आर्य समाज वालुज महानगर, औरगांबाद द्वारा डॉक्टरों और पुलिस अधिकारियों का फूल-मालाओं द्वारा किया गया स्वागत।

आर्य समाज पाणिनि नगर द्वारा मजूदरों को भोजन बांटा गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर द्वारा भोजन वितरण एवं राशन वितरण का कार्य किया गया।

आर्य समाज कासगंज, ऐटा द्वारा बांटा गया राशन।

आर्य समाज रुद्रपुर ने चलाया ऋषि लंगर।

आर्य समाज नाई की मण्डी, आगरा में भुखी गायों को खिलाया चारा।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा झांसी द्वारा बस स्टैंड पर गरीबों को भोजन-पानी प्रदान किया गया।

आर्य समाज बुढ़ाना द्वारा 300 से अधिक परिवारों में राशन वितरण।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी, मेरठ में गरीबों में राशन वितरित किया।

लाला लाजपतराय जनहित ट्रस्ट द्वारा पुलिस को 200 मास्क वितरित किए।

आर्य प्रतिनिधि सभा झारखंड ने चलाया सहयोग कार्यक्रम और वितरित की भोजन सामग्री।

वेद मन्दिर मथुरा के अधिष्ठाता परम पूज्य स्वामी स्वदेश जी महाराज के निर्देशन में गौशाला में चारा पहुंचाया गया।

आर्य समाज गाजीपुर और आर्यवीर दल गाजीपुर ने वितरित किया गया गरीबों को भोजन सामग्री।

आर्य समाज उत्तर लखीमपुर आसाम द्वारा गरीब परिवारों को बांटा गया राशन।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल वाराणसी द्वारा सैंकड़ों लोगों को भोजन प्रदान किया गया।

आर्य समाज मोगा, पंजाब द्वारा 200 परिवारों को भोजन सामग्री पहुंचाई गई।

आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना द्वारा भोजन, राशन सामग्री वितरित की गई।

आर्य समाज मुरार, ग्वालियर द्वारा सैंकड़ों लोगों को भोजन बांटा गया।

आर्य समाज मगहर संत कबीरनगर द्वारा भोजन वितरित किया गया।

आर्यवीर दल गुरुग्राम द्वारा लगाया गया ऋषि लंगर।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित महाशय धर्मपाल एम. डी.एच. दयानंद आर्य विद्या निकेतन द्वारा बामनिया, खवासा, करवड़ आदि गरीब क्षेत्रों में 250 परिवारों को भोजन, राशन किया गया वितरण।

महर्षि दयानंद सेवाश्रम थान्दला द्वारा विधवा महिलाओं को 10 दिन की राशन सामग्री प्रदान की गई।

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आर्य विद्या निकेतन भामल की ओर से राशन वितरित किया गया।

दयानंद सेवाश्रम संघ ने पूर्वोत्तर राज्यों असम, नागालैंड के अन्तर्गत बोकाजान, शांतिपुर, सरुपाथार, धन श्री, झापराजान, सीमापुर आदि स्थानों पर गांव में खाद्य सामग्री वितरित की।

आर्य समाज विदिशा द्वारा सैंकड़ों लोगों को भोजन के पैकेट बांटे गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना द्वारा 3000 गरीब लोगों को बांटें गए भोजन के पैकेट।

ऋषि भवन सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल में जरूरतमंद लोगों को किया गया भोजन वितरित।

आर्य समाज/वैदिक अध्यात्मिक मिशन द्वारा 400 परिवारों को कराया भोजन और बांटा राशन। 2000 मास्क बनाकर किए गए नि:शुल्क वितरण।

गुरुकुल कोतरंगी, छत्तीसगढ़ द्वारा 10 गांवों में निर्धनों को किया गया सब्जी का वितरण।

आर्य समाज महर्षि दयानंद सेवा सदन कुरुक्षेत्र द्वारा मास्क बनाकर किया गया नि:शुल्क वितरण।

वैदिक संस्कार केंद्र सुरत, गुजरात द्वारा 5000 लोगों को सुबह का नाश्ता कराया गया। मास्क और कपड़ें बांटे गए। पशुओं को आहार दिया गया। दवाईया वितरित की गई। सफाई कर्मचारियों को निम्बू, पानी बिस्कुट, चाय आदि बांटी गई। यज्ञ के लिए हवन सामग्री, समिधा और घी का प्रबंध किया गया। सड़क किनारे रह रहें लोगों को बिस्तर वितरित किए गए। पुलिस कर्मियों को जल वितरित किया गया।

ओ३म् आश्रय सेवाधाम द्वारा खाने की चीजों के पैकेट वितरित किए गए।

आर्य समाज हापुड़ ने बाटी आयुर्वेदिक औषधि किट

हापुड़ आर्य समाज ने कोरोना योाओं को आयुर्वेदिक औषधियों की किट आज प्रशासनिक विभाग व पुलिस विभाग में वितरित करी।अतरपुरा चौपले पर कोतवाल श्री राजेश कुमार व अन्य पुलिस

इंस्पेक्टर, सिपाहियों को वितरित की तथा थाने में कोतवाल श्री अवनीश गौतम अन्य अधिकारियों व स्टाफ को औषधी किट दी। किट में च्वनप्राश, तुलसी अर्क,कफ सिरप,पंचतत्व चूर्ण, नीम सोप, सेनिटाइजर आदि रखी गयी है।

विदेशों में मानव सेवा

आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका द्वारा बेलीस हेरली सैंटर के सहयोग से मूसा माबिदा ने 2000 बेघर लोगों को भोजन वितरित किया गया।

आर्यनेता श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी के नेतृत्व में आर्य समाज कोटा ने स्थापित किए सेवा के महान् कीर्तिमान

यूं तो पूरे भारत में आर्य समाज द्वारा कोरोना काल में विभिन्न प्रकार से मानव मात्र की सेवा की गई है लेकिन आर्य समाज कोटा की ओर से आर्य नेता श्री अर्जुन देव चड्ढा जी के नेतृत्व में जो सेवा के महान कीर्तिमान स्थापित किए गए हैं वें अत्यंत उल्लेखनीय और प्रशंसनीय है

आर्य समाज कोटा सदैव अपनी सेवा ओं के लिए विख्यात रहा है लेकिन वैश्विक महामारी कोरोना काल में उनके द्वारा की गई सेवाएं किसी एक केंद्र या घटक तक सीमित नहीं रही अपितु उन्होंने विभिन्न प्रकार से सेवा के जो कार्य किए हैं वे मानव मात्र के लिए प्रेरणा स्तंभ सिद्ध हो रहे हैं।

- पलायन करने वाले मजदूरों को सड़कों पर भोजन कराना।
- गरीब निर्धन मजदूरों को भोजन और राशन वितरण लगाता करना।
- गौ सेवा के लिए हरा, चारा खल, चोरी खिलाना
- पक्षियों के लिए जल सेवा हेतु परिंडे बांधना
- लगातार 55 दिनों तक गांव शहर, बाजार, स्कूल और अनेक अन्य स्थानों पर सैनिटाइजेशन की सेवा करना,
- पलायन करने वाली मजदूर महिलाओं पुरुषों और बच्चों को जो नंगे पैर ही जाने को मजबूर थे उनको चप्पल जूते पहनाना,

- रोग निवारण हेतु औषधीय काढ़ा पिलाना,
- गरीब मजदूर बच्चों को बिस्किट्स और चिप्स के पैकेट देना,
- सड़क चौराहे पर गर्मी से बचाव के लिए पुलिस वालों को आम पन्ना पिलाना,
- क्षेत्रीय अस्पतालों में ओपीडी में जा कर जाकर यजों का आयोजन करना,
- अनेक पुलिसकर्मियों को फेस शिल्ड, मास्क और जूस के पैकेट बांटना
- शराब की बिक्री का विरोध करना, और
- जब पूरे विश्व में लाखों घरों में यज्ञ का आयोजन किया गया तो उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना।
- बंदरों को केले और चनों का वितरण।
- घरों में मास्क बनाकर निर्धन लोगों को मुफ्त में बांटने का किया गया परोपकारी कार्य।

इन तमाम सेवाओं के साथ साथ सारे समाचारों को अखबारों में प्रकाशित करवाना यह एक कुशल नेतृत्व और सशक्त कार्यकर्ताओं का अद्भुत शौर्य है इसके लिए श्री अर्जुन देव चड्ढा जी तथा उनके सभी साथी अधिकारी कार्यकर्ता और सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई बहुत-बहुत धन्यवाद

मजदूर परिवारों को नाश्ता कराया

कोटा,10 मई। कोरोना वायरस के चलते जारी लॉक डाउन में श्रमिक बस्तियों में रहने वाले परिवारों को आर्य समाज ने नाश्ते में कचोरी समोसे व बिस्किट के पैकेट बांटे। समाज कोटा के तत्वाधान में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से मजदूर बस्तियों में भोजन ,नाश्ता फ्त, खाद्य सामग्री किट तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले सामान मास्क, सेनेटाइजर आदि उपलब्ध कराने का पिछले 25 मार्च से कार्य कर रहा है। आर्य समाज राजस्थान के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में युवा आर्य कार्यकर्ता विनोद सिंह कुशवाह के नेतृत्व में जिनेंद्र जैन, तुलसीराम प्रजापति, गौरव पालीवाल, कमल महावर, मनोज डोडिया ने कचोरी और समोसे का नाश्ता व बिस्किट के पैकेट दौलतगंज के पास मजदूर बस्ती मे तथा कबीर आश्रम के पास स्थित बस्ती में रह रहे दिहाड़ी श्रमिकों जो लॉक डाउन के कारण घर से बाहर नहीं जा सकते उनके घर जाकर वितरित किए।

गायो को खल-चुरी, हरा चारा खिलाया

कोटा, 27 मई। समाज कोटा पिछले दो महीनों से कोरोना वायरस जनित संकट काल में प्राणी मात्र के कल्याण की कामना से निरंतर सेवा के कार्य किए जा रहा

आर्य समाज ने मजदूरों को पहनाई चप्पल

संदेश न्यूज। कोटा. आर्य समाज के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में आज युवा कार्यकर्ता विनोद कुशवाहा के नेतृत्व में तुलसीराम प्रजापति गौरव पालीवाल ,कमल महावर, मुकेश वर्मा, हेमराज ढोंढिया, सोहनी बाई, कुशवाहा ने शंभूपुरा फोरलेन पर मजदूर परिवारों चप्पलें पहनाई।

जरूरतमंद लोगों को आटे के कट्टे बांटे

कोटा, 26 मई। कोरोना वायरस के कारण जारी लॉक डाउन से प्रभावित जरूरतमंद लोगों को का कार्य निरंतर किया जा रहा है।इसी अभियान के अंतर्गत आज आर्य युवा कार्यकर्ता वेदमित्र वैदिक,

आर्य समाज ने नयागांव के घरों को किया सेनेटाईज

कोटा, 25 मई। आर्य समाज कोटा के कार्यकर्ता कोरोना काल में किया गया।

आर्य समाज के युवा कार्यकर्ता

आर्य समाज ने पक्षियों के लिए बांधे परिंडे

कोटा,28 मई। प्राणी मात्र के कल्याण की भावना से कार्य करने के लिए कृत संकल्प आर्य समाज कोटा द्वारा पूर्व

जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में पक्षियों के लिए परिंडे बांधे गए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से आर्य समाज के युवा विनोद सिंह कुशवाहा के नेतृत्व में गौरव पालीवाल, तुलसीराम प्रजापति ,कमल महावर, धनराज डोडिया, मुकेश वर्मा व क्षेत्रपाल सिंह कुशवाह ने नया गांव मेन रोड तथा पुरानी आंवली रोजडी क्षेत्र में पेड़ों पर पक्षियों के लिए पानी के परिंडे बांधे। साथ ही लोगों को उनमें नियमित रूप से जल भरने व पक्षियों के लिए चुग्गा डालने का संकल्प कराया।

इस बारे में अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि गर्मी से व्याकुल पक्षियों के लिए आर्य समाज द्वारा शहर के विभिन्न हिस्सों में परिंडे बांधने का कार्य किया जा रहा है।

आर्य समाज ने पुलिसकर्मियों को फेस शील्ड वितरित किए

संदेश न्यूज। कोटा. आर्य समाज द्वारा सार्वजनिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से कोटा शहर में अपने सेवा प्रकल्प के माध्यम से कई कार्य किए जा रहे हैं। आर्य समाज के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा की प्रेरणा से युवा आर्य कार्यकर्ता किशन आर्य हरियाणा, प्रीति सिंह, संगीता आर्य, विमलेश कश्यप ने पुलिसकर्मियों को डायरेक्ट स्यालश प्रोटेक्शन फेस शील्ड ,मास्क व जूस पैकेट बांटे। कार्यकर्ताओं ने फोरलेन एन्ट्री नाका पुलिस चौकी तथा रंगबाड़ी पुलिस चौकी के कोरोना योद्धा पुलिसकर्मियों को फेस शिल्ड मास्क व जूस के पैकेट वितरित कर कोरोना योद्धाओं का सम्मान किया।

आर्य समाज कोटा के सेवा कार्यों को मिल रही सराहना: प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुन देव चड्ढा के निर्देशन में समाज के आर्य युवा कार्यकर्ता वेद मित्र वैदिक ममता, मैत्री आर्य तथा विपश्यना आर्य ने प्रेम नगर अफोर्डेबल हाउसिंग योजना कोटा में गायों को खल चुरी पशुआहार व हरा चारा खिलाया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोरोना वायरस संकट अभी ....

रही है वह केवल चिंताजनक ही नहीं चिंतन करने के लिए भी बाध्य करती है।

आजकल लोग घरों से न केवल बाहर निकल रहे हैं बल्कि झुंड और भीड़ के रूप में यहां वहां जमा भी हो रहे हैं और एक दूसरे के से घर में कैद रहने की अवधि के सुख-दुख भी शेयर कर रहे हैं। इस्तेमाल किए हुए मास्क और गुटकों की पीक सड़कों पर देखी जा सकती है, सार्वजनिक स्थलों पर थूकने पर जुर्माना है लेकिन शायद ये लोग उस नियम और व्यवस्था को भूलने की बड़ी गलती रही है लोगों की समझ में नहीं आ रहा कि संकट अभी टला नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और तमाम महामारी विशेषज्ञों का एक मत कहना है कि जून-जुलाई में भारत में कोरोना वायरस का फैलाव चरम पर होगा। कथित रूप से विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि अगस्त मध्य तक भारत में कोरोनावायरस का विस्तार 2.5 करोड़ के आसपास होगा। इस कथन को अगर गंभीरता से लिया जाए तो क्या हमें इस प्रश्न का उत्तर खुद से नहीं पूछना चाहिए।

इस बात पर हम भारतीय गर्व कर सकते हैं कि भारत में अब तक 1.50 लाख से ज्यादा मरीज 65 दिन में जबकि अमेरिका में संख्या का यह आंकड़ा 10 दिन में पूरा हो गया था। अमेरिका, ब्राजील, रूस, स्पेन, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, और तुर्की इन 9 देशों की कुल संख्या आबादी 109.8 करोड़ है जो भारत से 20 करोड़ कम है आप इस बात से प्रसन्न हो सकते हैं कि 9 देशों में करीब 36.50 लाख कोरोना मरीज हो चुके हैं जबकि अपने भारत में संख्या 1.58 लाख मात्र है। भारत में मरने वालों की संख्या भी बहुत कम है, ऐसा समझिए कि 10 लाख आबादी पर मात्र 3 लोगों की मृत्यु हो रही है लेकिन खुश होने से ज्यादा चिंता के अनेक कारण हैं जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन कि भारत में 2.5 करोड़ लोगों को संक्रमण की चेतावनी इसके अतिरिक्त यह तथ्य कि आज की तारीख में सबसे अधिक संक्रमितों के देशों में हमारा भारत भी 10वें नंबर पर है।

हालांकि हम किसी को डराना नहीं चाहते लेकिन यह हम सब का कर्तव्य है की हम सतर्क रहें, सावधान रहें, जागरूक रहें और बीमारी को बढ़ावा देने में सहायक न बनें। भारत सरकार के नियमों का पालन करते हुए अपने अपने क्षेत्र में कार्य करते रहें। लेकिन किसी भी तरह की हड़-बड़ाहट, घबराहट और छटपटाहट से बचें। संतुलित रहें और दिन में तीन चार बार हाथ धोएं, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। सड़क पर या कहीं भी गंदगी न फैलाएं। यज्ञ करें, ईश्वर उपासना करें। सबके लिए मंगल कामना करें। सभी निरोग हो सभी स्वास्थ्य हों, ऐसी प्रार्थना करें। - ***महामन्त्री***

पृष्ठ 2 का शेष

तथाकथित सन्तों के मंचों से ...

जरुर हो सकता है कि स्त्री जाति कृष्ण का सम्मान करती रही होगी लेकिन इन झूठ के ठेकेदारों ने खुद महिलाओं का शोषण करने के लिए श्रीकृष्ण के महान चरित्र को रासलीला से जोड़ दिया। सोचिये जो श्रीकृष्ण भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करने पर जाकर कपड़े से ढक देते हैं, वो भला किसी को नंगा देखने के लिए कपडें चुरायेंगे ?

लेकिन निति, ज्ञान, ध्यान, तप और साधना के सिरमौर योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के चरित्र को वह लोग कलंकित कर रहे है। जो अपने करोड़ों-अरबों के ट्रस्ट बनाकर महलों में सुख भोग रहे और भगवान श्रीकृष्ण जी की कथा में अल्लाह -मौला कर रहे हैं और बेशर्मी के साथ कह रहे हैं कि क्या फर्क पड़ता है। ये आज के जयचंद हैं जो थोड़ी-सी प्रसिद्धि के लिए पैसा कमाने के लिए आज भगवान श्री कृष्ण को आरोपित कर रहे हैं। हालाँकि धर्म की बुनियादों में योगेश्वर श्रीकृष्ण हमेशा से जीवित हैं और रहेंगे, उन्हें कोई मिटा नहीं सकता। लेकिन जरूरत है इन फर्जी कथावाचकों से बचने की जो भगवान श्री कृष्ण जी के चरित्र को कलंकित कर रहे हैं और जीसस और मोहम्मद को महान बता रहे हैं। जो ध्यान साधना छोड़कर नमाज-अजान का प्रचार कर रहे हैं और फिर कह रहे है क्या फर्क पड़ता है? - ***सम्पादक***

अनावश्यक चिन्ता (Anxiety) से कैसे बचें?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

देश युवा शक्ति को सुदिशा प्रदान करने वाले स्वामी देवव्रत जी द्वारा अनुभूत वैदिक ज्ञान रश्मियों से लाखों आर्य वीरों ने जीवन जीने की श्रेष्ठ कला सीखी है आपके सानिध्य में और मार्गदर्शन में भारत के कोने कोने में आर्य वीर दल के माध्यम से अनेक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन होता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए आपका संदेश, उपदेश और निर्देश मानव मात्र के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है प्रस्तुत आलेखों की श्रंखला में स्वामी जी द्वारा अनुभूत वैदिक ज्ञान के माध्यम से मानव मात्र के लिए जीवन उपयोगी कुछ शिक्षाएं क्रमशः दी जाएंगी प्रथम आलेख में स्वामी जी ने बताया है की अनावश्यक चिंता से कैसे बचें - सम्पादक

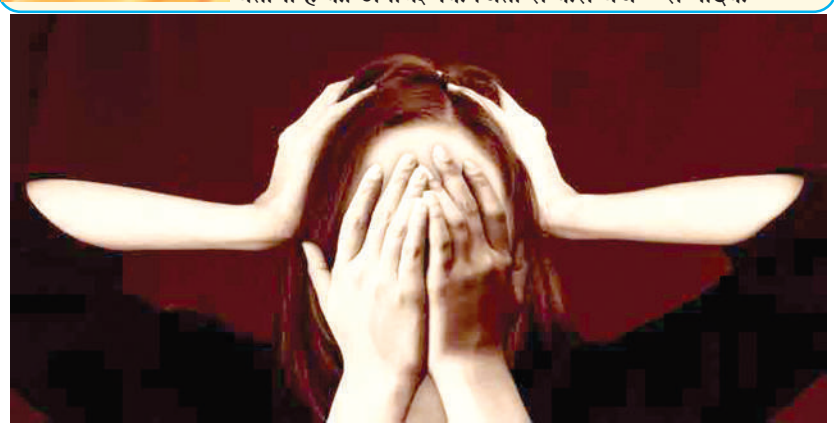

किसी विषय में अनावश्यक सोचना या विचार करना चिन्ता कहलाती है। अनिष्ट या अनहोनी का चिन्तन, असुरक्षा की भावना, अविश्वास, अभावों की कल्पना आदि चिन्ता के अनेक कारण है।

चिन्ता एक मानसिक अनुभूति है जिसके केन्द्र में भय ही विद्यमान रहता है।

चिन्ता के कारण शरीर पर होने वाले दुष्परिणाम

चिन्ता के कारण हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। रक्तचाप में वृद्धि, हृदय का डूबना, श्वास-प्रश्वास में तेजी, शरीर में पीड़ा, कम्पन आदि उपद्रव प्रकट होते हैं। यदि चिन्ता अधिक बढ़ जाये तो व्यक्ति पागल के समान व्यवहार करने लगता है। चिन्ता डर व्यक्ति की निद्रा में बाधा पड़ती है। भूख कम हो जाती है। स्त्रियों का मासिक चक्र अनियमित हो जाता है।

कुछ सीमा तक चिन्ता अच्छी भी है जिसके कारण व्यक्ति अपने कर्त्तव्य कर्मो को सावधानी से करता है। परन्तु अनावश्यक चिन्ता अनेक उपद्रव उत्पन्न कर व्यक्ति की जीवन शैली को कुण्ठित कर देती है। नीचे कुछ सूत्र दिये जाते हैं जिनके अनुसार आचरण करने से अनावश्यक चिन्ता से छुटकारा मिलेगा।

1. **आज का काम कल पर न छोड़ें**

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयेगी, फेर करेगा कब।।

जो कार्य आज करना है, सोने से पहले उसकी सूची और योजना बना लें। महत्वपूर्ण कार्य को पहले कर लेने से चिन्ता कम हो जायेगी। कार्यालय की फाईल घर पर न लायें। आज का काम कल पर छोड़ देने से कार्य का दबाव बढ़ जाता है। किसी कार्य को बहाना बना कर टाले नहीं।

2. **सोने और जागने का समय निश्चित करें।**

समय पर सोने और प्रातः काल जल्दी उठने वाले व्यक्ति के सभी काम समय पर पूरे हो जाते हैं। मन में उत्साह और ज्ञारीर में स्फूर्ति बनी रहती है। प्रातः काल समय पर जागने के लिए सायंकाल समय पर सो जाना चाहिये। जो व्यक्ति सूर्योदय तक सोता रहता है सूर्य की किरणें उसके ओज, बल, बुद्धि का हरण कर लेती है। ब्रह्ममुहूर्त्त का शान्त वातावरण, शीतल वायु शरीर एवं मन दोनों को शान्त एवं उत्साहित बनाये रखता है। नित्य कर्मो से निवृत्त होकर खुली वायु में व्यायाम, भ्रमण, योगासन प्राणायाम करने वाले की चिन्ता भाग जाती है।

3. **अधिक चिन्ता होने पर लम्बा और गहरा श्वास-प्रश्वास करें।**

यह प्रयोगों से प्रमाणित हो चुका है कि जब आप लम्बा श्वास छोड़ते हैं तो सभी प्रकार के मानसिक तनावों से छुट जाते हैं। प्रतिदिन अनुलोम विलोम और बाह्य प्राणायाम से मन शान्त हो जाता है। इसी भाँति योगासन भी नाड़ी तन्त्र पर शान्त प्रभाव डालते हैं। प्रातःकालीन भ्रमण, व्यायाम और कोई खेल खेलना भी उपयोगी है।

4. **जो कार्य आपकी सीमा से बाहर है उसे करने का विचार छोड़ दो।**

किसी भी कार्य को करने से पहले अपना सामर्थ्य, साधन और अनुकूल स्थिति का मूल्यांकन कर लेना आवश्यक है। हाथी यदि पहाड़ से टकरायेगा तो उसके दन्त भंग होंगे ही। यद्यपि इसके अपवाद भी देखे जाते हैं। दृढ़ संकल्प से किसी कार्य में जुट जाने पर उसमें सफलता भी मिलती है परन्तु जो कार्य आपकी सीमा से बाहर है उसमें उलझ जाना अपने समय, धन और ऊर्जा का दुरूपयोग ही माना जायेगा। यदि आपने दृढ़ निश्चय कर लिया है तो फिर निश्चिन्त होकर उसमें लग जाईयें। फल ईश्वराधीन है। आपका कार्य पूर्ण पुरुषार्थ करना है। याद रखो **तेते पांव पसारिये जेती लाम्बी सौर**

5. **सदा अपने कार्य में व्यस्त राहे**

खाली मन में ही अनावश्यक चिन्ता के भाव उत्पन्न होते हैं। जो अपनी दिनचर्या और दैनिक कार्यो में संलग्न रहता है उसे खुल कर भूख लगती है। गाढ़ निद्रा आती है और अनावश्यक बातों के लिये समय ही नहीं मिलता। खाली मन ज्ञौतान का घर होता है। यदि आपके पास करने को कार्य नहीं है तो किसी सामाजिक संस्था के साथ जुड़कर सेवा के कार्यो में भाग लेना चाहिये। किसी रोगी, दीन, दुःखी, असहाय की सहायता करने से मन को जो शान्ति मिलेगी उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। - ***क्रमशः***

Continue From Last Issue

Maharish Dayanand Saraswati's Beliefs

22. The perfection of education is attested by the competency of knowledge, the adoption of civilized manners, the performance of meritorious works, the subjection of senses, the control of passions and wicked desires, the improvement of character, and the absence of barbarism.

23. The proper Puranas (ancient books) are the works of the Brahma and other sages of antiquity, called the Aitareya and the other three Brahmanas. The genuine history is found in the books called Kalpa (chronicles), Gatha (story), Narashansi (biographies of men). But the Bhagawat and the other seventeen Puranas are mythology, religious comedies, novels, mysteries, or miracles.

24. The Tirtha (religious ferry) is the spiritual ark, by which the sea of sorrow or the abyss of pain is crossed. Hence, the Tirathas are the speaking of truth, the attainment of knowledge, the friendship of savants, the practice of morality, dominion over the self, the dicipline of mind, the magnanimity of heart, the instruction of science, and the habit of beneficence. These are recognized ferries of the happy land ; but cities, rivers and tanks, which ignorence call the holy places of pilgrimage, are only the pools of woe or the sloughs of despondence.

25. The spirit of enterprise is perferable to resignation to decrees of fate which are no more than mere consequences of the acts of previous lives ; because it modifies and amends the entire series of antecedent acts in the next life. The slackness of exertion spoils all of them. Hence the works of present life are more important than the whole and entire reliance on the wholesale blind fate.

26. The commendable condudt of man is shown by his discriminate treatment of merits, and sympathetic regard for pleasure and pain, profit and loss of others. The contrary course is reprehensible.

27. The observance of caremonial should contribute to the improvement of body, mind and spirit. There are 16 ceremonies from conception to cremation. These purificatory rites are binding on man. After cremation nothing should be done for the dead.

28. The Yajna (worship) is the entertainment of the learned in proportion to their worth, the business of manufacture, the experiment and application of chemistry, physics and the like arts of peace, the instruction of people the purification of air, the nourishment of vegetable, kingdom by the employment of the principles of meteorology, called Agnihotra in Sanskrit, which showers blessings all around. It is the most important duty of man.

29. The ancient usage demands attribution of the appellation, called 'Arya' to the best, and 'Dasyu' to the vicious portion of mankind.

30. India is called Aryavarta, because the Aryan branch of the human race has dwelt there since creation. It is bounded on the south by the Vindhya (the barrier of barbarians), on the west by the Attock (obstruction) or Indus (Luna), and on the east by the Brahmaputra (the. son of Neptune). The country within these confines is called Aryavarta proper" and its permanent inhabitants, the Aryas.

31. The competency of the teacher is proved by his. power to explain the Vedas and their commentaries, and. to reform the character of pupils through the salutary medium of the instruction of morality and the prohibition of immorality.

32. The fitness of the pupil is shown in his love for- the acquisition of knowledge, his willingness to receive instruction, his reverence for learned and virtuous men, his attendance upon the teacher, and his execution of orders.

33. The Guru (initiator) is the father, the teacher of truth, and the corrector of misconduct.

34. The proper Purohita (priest) is one who cordially loves the good of his spiritual folk and preaches them virtue and truth.

35. The Upadhyaya (professor) should be able to teach certain sort of the Vedic lore or should be the teacher of one science.

36. The Shishtacher (etiquette) is amiable behaviour- with readiness to accept truth and to reject untruth, after the careful examination of the octave or eightfold. evidence of logic, attentiveness to study in the bachelor- life of school and the general politeness of conduct. These are the characteristics of the truly civilized man.

To be continued.....

With thanks By:
"Flash of Truth"

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत सहयोग के सराहनीय सेवा

कीर्ति नगर अग्निकांड में प्रभावितों एवं लौट रहे प्रवासी मजदूरों को बांटे कपड़े

आजकल आपदाओं का दौर लगातार जारी है। कोरोनावायरस तो सारे संसार में अपना रंग दिखा ही रहा है। लेकिन इसके साथ-साथ कभी भूकम्प, कभी ओला वृष्टि, कभी भयंकर गर्मी और कहीं पर बाढ़ जैसी स्थिति मनुष्य को यह सोचने के लिए मजबूर कर रही है कि आखिर समस्याओं का यह सिलसिला कब समाप्त होगा। आज कल तो ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे प्रकृति मानवता की परीक्षा लेने कार्य रही है।

25 मई 2020 को रात्रि में कीर्ति नगर की कलस्टर झुग्गी कॉलोनी में अचानक लगी आग से 50 घर जलकर राख हो गए और देखते ही देखते सैकड़ों लोगों महिलाओं, पुरुष और बच्चों के साजो् सामान के रूप में सपने भी जलकर खाक हो गए, सिर के ऊपर से आशियाना छिन गया। ऐसी विकट स्थिति में जब एक तरफ कोरोनावायरस की मार से बचाव के लिए घर में रहने का नियम पालन करने की चुनौती सामने हो और दूसरी तरफ घर भी जलकर राख का ढेर हो जाए तो आदमी सब्र करें तो कैसे करे?

ऐसी विषम परिस्थितियों में अपनी सूझबूझ और अनुपम सेवाओं के लिए विख्यात आर्य समाज की सेवाभावी संस्था सहयोग आगे आई और उन्होंने उन सैकड़ों लोगों को उनकी मूल भूत जरूरत के सामान जैसे पहनने के कपड़े, बच्चे, पुरुष, महिलाओं के लिए जूते चप्पल और अन्य जरूरत के सामान उपलब्ध कराए तथा साथ में उनको सांत्वना का विशेष उपहार प्रदान किया। आर्य समाज कीर्ति नगर की ओर से उन सभी परिवारों के लिए भोजन और नाश्ते का प्रबंध किया गया। इस तरह मजबूर और बेबस लोगों को इस आगजनी से थोड़ी राहत तो जरूर मिली लेकिन यह एक सोचने का विषय है कि प्राकृतिक आपदाओं का दौर निरंतर क्यों जारी है और ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? आज के दौर पूरी मानवता के सामने यह एक यक्ष प्रश्न है, लेकिन ईश्वर की व्यवस्था को कौन जानता है, मनुष्य को तो अपना कर्तव्य करते रहना चाहिए, सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहना चाहिए, सहयोग यही कर रहा है, मानव सेवा के पथ पर आगे बढ़ते जा रहा है। सेवा के इस क्रम में यमुना स्पोटर्स कॉम्लेक्स में दूर-दूर से मजदूरों को लाया जा रहा है जिन्हें मेडिकल के बाद ट्रेन टिकट देकर उनके गाँव भेजने की व्यवस्था हो रही है।

इन मजदूरों को सरकार उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत है। सरकार के कार्य में सहयोग और मजदूरों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में आर्य समाज भी अपनी अहम् भूमिका निभा रहा है।

स्थानीय आर्य समाज सूरजमल विहार द्वारा भोजन और पानी की व्यवस्था की जा रही है। इसी कड़ी में 28 मई, 2020 को 'सहयोग' के अंतर्गत यमुना स्पोटर्स कॉम्लेक्स में लगभग 2000 लोगों को कपड़े पहुंचाए गए।

स्पोटर्स कॉम्लेक्स के हेड और कमिश्नर ने आर्य समाज का धन्यवाद दिया।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़-चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं।

अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मो का योग

कीर्ति नगर झुग्गी झोपड़ी अग्निकांड से प्रभावित लोगों को कपड़े और जूते तथा यमुना स्पोट्स कॉम्लेक्स में एकत्र प्रवासी मजदूरों को वितरण हेतु वस्त्र भेजे गए।

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

खेद व्यक्त

खेद है कि कोरोना वायरस से उत्पन्न संक्रमण की वैश्विक महामारी के कारण सम्पूर्ण भारत में लागू लॉक डाउन की स्थिति के चलते आर्यसन्देश साप्ताहिक माननीय सदस्यों को डाक सेवा द्वारा नहीं भेजा जा रहा है। अत: यह अंक भी ई-पत्र के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कपया घर में रहें - स्वयं स्वस्थ रहें और परिवार के साथ-साथ समाज को भी स्वस्थ बनाए रखने में सहयेाग करें।- *सम्पादक*

शोक समाचार

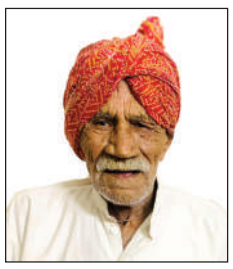

श्री रिजकराम सोलंकी का निधन

आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री दिनश सोलंकी जी के दादाजी एवं पूर्व प्रधान श्री रिजकराम सोलंकी जी का 94 वर्ष की आयु में 21 मई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा उनके निवास पर 29 मई, 2020 को सम्पन्न हुई।

श्रीमती अमृतबाला गुप्ता का निधन

आर्यसमाज राजनगर पालम कालोनी की वरिष्ठ सदस्या माता अमृतबाला गुप्ता जी का 22 मई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

पं. चिन्तामणि वर्मा जी को पुत्रीशोक

आर्यसमाज म्यांमार के पं. चिन्तामणि वर्मा जी की सुपुत्री आर्यकली डॉ. विभा वर्मा जी का दिनांक 27 मई, 2020 को को असमय निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। दिसम्बर 2019 वे दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी और तभी से वे जीवन-मृत्यु से जूझ रही थीं।

श्री बलबीर सिंह शास्त्री जी नहीं रहे

आर्यसमाज धामावाला, देहरादून के सदस्य श्री बलबीर सिंह शास्त्री जी का दिनांक 20 मई, 2020 को 78 वर्ष की आयु में कैलाश हॉस्पीटल में निधन हो गया।

श्री राकेश आर्य जी का निधन

आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली के सदस्य श्री राकेश आर्य जी का दिनांक 24 मई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 मई, 2020 से रविवार 31 मई, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28-29 मई, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 मई, 2020

प्रथम पृष्ठ का शेष

नगर निगम के अधिकारियों को सौंपी .....

महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, उप प्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, श्री सुरेंद्र चौधरी जी, श्री नीरज आर्य जी इत्यादि अनेक अन्य आर्य नेताओं के साथ-साथ पूर्वी दिल्ली नगर निगम की महापौर श्रीमती अंजू कमल कांत जी, उत्तरी नगर निगम के महापौर सरदार अवतार सिंह जी और दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की महापौर श्रीमती सुनीता कांगड़ा जी एवं भाजपा के राष्ट्रीय सचिव और भूतपूर्व विधायक श्री आर. पी. सिंह जी उपस्थित थे। इस अवसर पर सभी कोरोना वायरस से पीड़ितों सहित संपूर्ण विश्व के लिए मंगल कामना की गई। सब सुखी हों, सब निरोग हो ऐसी कामना करते हुए नगर निगम के कर्मचारियों के लिए 100000 डिस्पोजल प्लास्टिक के बैग भी निगम को सौपे जाने का आश्वासन दिया गया। नगर निगम के अधिकारियों को वेद भगवान एवं सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट स्वरूप प्रदान किए गए

आर्य समाज हमेशा से मानव सेवा के लिए तत्पर रहा है और आगे भी इसी तरह पूरी निष्ठा के साथ कोरोना वायरस से निजात दिलाने के लिए लड़ाई लड़ने वाले योद्धाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलता रहेगा तथा उनकी मूलभूत जरूरतों का ख्याल रखते हुए सेवा के इस अभियान को संचालित करता रहेगा इससे पूर्व भी आर्य समाज ने कोरोना काल में एक तरफ निर्धन मजदूर लोगों के लिए भोजन-राशन की व्यवस्था की तो वहीं समय-समय पर डॉक्टरों नर्सों पैरामिलिट्री स्टाफ और सफाई कर्मचारियों का सम्मान और उत्साहवर्धन भी किया है और क्यों ना करें इनका उत्साहवर्धन और सम्मान, यही तो वे जांबाज हैं, जो पूरी शक्ति के साथ हिम्मत और हौसला रखते हुए मानवता की सेवा करते रहते हैं। अपने परिवार और अपनी जान की परवाह न करते हुए भी दिन-रात सेवा में रत रहते हैं। ऐसे तमाम महानुभावों को आर्य समाज नमन करता है और हमेशा इनकी सेवा और सम्मान के लिए कृतसंकल्प हैं।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

प्रतिष्ठा में,

उत्तरी दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री अवतार सिंह जी, पूर्वी दिल्ली की महापौर श्रीमती अंजु जी, दक्षिण दिल्ली की महापौर श्रीमती सुनीता कांगड़ा जी, भाजपा के राष्ट्रीय सचिव श्री आर. पी. सिंह जी एवं श्री जय प्रकाश जी, चेयरमैन स्टेंडिग समिति को वेद भगवान एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते सर्वश्री जोगेन्द्र खट्टर जी, कीर्ति शर्मा जी, श्रीमती उषाकिरण आर्या जी, अरुण प्रकाश जी, विनय आर्य जी, अशोक गुप्ता जी, सुभाष ढींगरा जी एवं अन्य महानुभाव।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह